1.1 प्रस्तावना(Introduction):-

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा के Adolescence शब्द का हिंदी पर्यायवाची है। Adolescence शब्द का उद्भव लैटिन भाषा से माना गया है जिसका सामान्य अर्थ है विकसित होना। किशोरावस्था 13 साल से प्रारंभ होकर 19 साल कीउम्र तक चलती है **(शर्मा एवं हूडा 2007)।** मनोवैज्ञानिक ने किशोरावस्था को 'आँधी और तूफान'कीअवस्था कीसंज्ञा दी है **(गुप्ता, 2011)**। इस अवस्था में किशोरों द्वारा वे सभी संवेग दिखाऐ जाते है जो प्रारंभिक बाल्यावस्था में बालकों द्वारा दिखाऐ जाते है। दूसरे शब्दों में, किशोरों द्वारा क्रोध, डर, चिन्ता, उत्सुकता, जलन, हर्ष, दुःख तथा अनुराग दिखाऐ जाते है**(मंगल, 2011)।** इस अवस्था में किशोरों में सबसे अधिक क्रोध उस परिस्थिति में आता है। जब कोई भी व्यक्ति किशोरोंकी आलोचना करते है तब वे गुस्सा करने के लिए मजबूर हो जातें है। किशोरों में उन व्यक्तियों से अधिक इर्ष्या तथा जलन होती है जिनके पास उनकी तुलना में अधिक आरामकीचीजें हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगींण विकास माना जाता है औरउसकी उत्पत्ति बचपन में ही बालकों पर करानीचाहिए**(माथुर, 2010)**। कहा जाता है कि सुसंस्कृत मानवबनाना है तो अच्छे सुसंस्कार विद्यार्थियों पर डालने चाहियें। बालकों को सही दिशा में ले जाकर आदर्श नागरिक, सुसंस्कृत मानव, हम तैयार कर सकते है। शिक्षाकि दूसरी व्याख्या के संबंध में हम कहतेहै कि, शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा है। व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में शारीरिक विकास द्वारा मानसिक विकास करना महत्वपूर्ण होता है। शारीरिक व मानसिक विकास का परिणाम व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। किशोरावस्था के विद्यार्थियोंकीसमस्या से संबंधित इस अवस्था में योग्य पारिवारिक व सामाजिक पर्यावरण उपलब्ध करके उनको सुयोग्य मार्गदर्शन करना, योग्य दिशा दिखाना, एक परिपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना यह उनके अभिभावकों, समाज औरशिक्षककीजिम्मेदारी औरउनके कर्तव्य होते है **(सिंह, 2010)।**

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल तेरहँ से उन्नीस वर्ष तक रहता है, परंतु किसी-किसी व्यक्ति में यह बाईस वर्ष तक चला जाता है। यह काल भी सभी प्रकारकि मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ-साथ बालककीकल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौंदर्यकीरुचि उत्पन्न होती है और बालक इसी समय नए-नए और ऊँचे-ऊँचे आदर्शों को अपनाता है। बालक भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूपरेखा उसकी किशोरावस्था में बन जाती है। जिस बालक ने धन कमाने का स्वप्न देखा, वह अपने जीवन में धन कमाने में लगता है। इसी प्रकार जिस बालक के मन में कविता और कला के प्रति लगन हो जाती है, वह इन्हीं में महानता प्राप्त करनेकीचेष्टा करता और इनमें सफलता प्राप्त करना ही वह

जीवनकीसफलता मानता है। जो बालक किशोरावस्था में समाज सुधारक और नेतागिरी के स्वप्न देखते हैं, वे आगे चलकर इन बातों में आगे बढ़ते है।

पश्चिम में किशोरावस्था का विशेष अध्ययन कई मनोवैज्ञानिकों ने किया है। किशोर अवस्था काम भावना के विकासकीअवस्था है। कामवासना के कारण ही बालक अपने में नवशक्ति का अनुभव करता है। वह सौंदर्य का उपासक तथा महानता का पुजारी बनता है। उसी से उसे बहादुरी के काम करनेकीप्रेरणा मिलती है।

किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वताकीअवस्था है। इस अवस्था में बच्चेकीहड्डियों में दृढ़ता आती है; काफी भूख लगती है। कामुकताकीअनुभूति बालक को13 वर्ष से ही होने लगती है। इसका कारण उसके शरीर में स्थित ग्रंथियों का स्राव होता है। अतएव बहुत से किशोर बालक अनेक प्रकारकीकामुक क्रियाएँ अनायास ही करने लगते हैं। जब पहले पहल बड़े लोगों को इसकी जानकारी होती है तो वे चौंक से जाते हैं। आधुनिक मनोविश्लेषण विज्ञान ने बालककीकिशोर अवस्थाकीकामचेष्टा को स्वाभाविक बताकर, अभिभावकों के अकारण भय का निराकरण किया है। ये चेष्टाऐ बालक के शारीरिक विकास के सहज परिणाम हैं। किशोरावस्थाकीस्वार्थपरता कभी-कभी प्रौढ़ अवस्था तक बनी रह जाती है। किशोरावस्था का विकास होते समय किशोर को अपने ही समान लिंग के बालक से विशेष प्रेम होता है। यह जब अधिक प्रबल होता है, तो समलिंगी कामक्रियाएँ भी होने लगती हैं। बालककीसमलिंगी कामक्रियाएँ सामाजिक भावना के प्रतिकूल होती हैं, इसलिए वह आत्मग्लानि का अनुभव करता है। अत: वह समाज के सामने निर्भीक होकर नहीं आता। समलिंगी प्रेम के दमन के कारण मानसिक ग्रंथि मनुष्य में पैरानोइया नामक पागलपन उत्पन्न करती है। इस पागलपन में मनुष्य एक और अपने आपको अत्यंत महान व्यक्ति मानने लगता है औरदूसरी औरअपने ही साथियों को शत्रु रूप में देखने लगता है। ऐसी ग्रंथियाँ हिटलर और उसके साथियों में थीं, जिसके कारण वे दूसरे राष्ट्रोंकीउन्नति नहीं देख सकते थे। इसी के परिणामस्वरूप द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा।

किशोर बालक उपर्युक्त मन:स्थितियों को पार करके, विषमलिंगी प्रेम अपने में विकसित करता है और फिर प्रौढ़अवस्था आने पर एक विषमलिंगी व्यक्ति को अपना प्रेमकेंद्र बना लेता है, जिसके साथ वह अपना जीवन व्यतीत करता है।कामवासना के विकास के साथ-साथ मनुष्य के भावों का विकास भी होता है। किशोर बालक के भावोद्वेग बहुत तीव्र होते हैं। वह अपने प्रेम अथवा श्रद्धाकीवस्तु के लिए सभी कुछ त्याग करने को तैयार हो जाता है। इस काल में किशोर बालकों को कला और कविता में लगाना लाभप्रद होता है। ये काम बालक को समाजोपयोगी बनाते हैं।

किशोर बालक सदा असाधारण कार्य करना चाहता है। वह दूसरों का ध्यान अपनी और आकर्षित करना चाहता है। जब तक वह इस कार्य में सफल होता है, अपने जीवन को सार्थक मानता है और जब इसमें वह असफल हो जाता है तो वह अपने जीवन को नीरस एवं अर्थहीन मानने लगता है। किशोर बालक में डींग मारने कीप्रवृत्ति भी अत्यधिक होती है। वह सदा नए-नए प्रयोग करना चाहता है। इसके लिए दूर-दूर तक घूमने में उसकी बड़ी रुचि रहती है।किशोर बालक का बौद्धिक विकास पर्याप्त रूपसे होता है। उसकी चिंतन शक्ति अच्छी होती है। इसके कारण उसे पर्याप्त बौद्धिक कार्य देना आवश्यक होता है। किशोर बालक में अभिनय करने, भाषण देने तथा लेख लिखनेकीसहज रुचि होती है। अतएव कुशल शिक्षक इन साधनों द्वारा किशोर का बौद्धिक विकास करते हैं।किशोर बालककीसामाजिक भावना प्रबल होती है। वह समाज में सम्मानित रहकर ही जीना चाहता है। वह अपने अभिभावकों से भी सम्मानकीआशा करता है। उसके साथ 10-12 वर्ष के बालकों जैसा व्यवहार करने से, उसमें द्वेषकि मानसिक ग्रंथियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे उसकी शक्ति दुर्बल हो जाती है और अनेक प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

बालक का जीवन दो नियमों के अनुसार विकसित होता है, एक सहज परिपक्वता का नियम औरदूसरा सीखने का नियम। बालक के समुचित विकास के लिए, हमें उसे जल्दी-जल्दी नहीं सिखाना चाहिए। सीखने का कार्य अच्छा तभी होता है जब वह सहज रूप से होता है। बालक जब सहज रूप से अपनी सभी मानसिक अवस्थाएँ पार करता है तभी वह स्वस्थ और योग्य नागरिक बनता है। कोई भी व्यक्ति न तो एकाएक बुद्धिमान होता है और न परोपकारी बनता है। उसकी बुद्धि अनुभवकीवृद्धि के साथ विकसित होती है और उसमें परोपकार, दयालुता तथा बहादुरी के गुण धीरे-धीरे ही आते हैं। उसकी इच्छाओं का विकास क्रमिक होता है। पहले उसकी न्यून कोटिकीइच्छाएँ जागृत होती हैं औरजब इनकी समुचित रूप से तृप्ति होती है। तभी उच्च कोटिकीइच्छाओं का आविर्भाव होता है। यह मानसिक परिपक्वता के नियम के अनुसार है। ऐसे ही व्यक्ति के चरित्र में स्थायी सदगुणों का विकास होता है और ऐसा ही व्यक्ति अपने कार्यों से समाज को स्थायी लाभ पहुँचाता है|

यह अवस्था बालक के संवेगों की अवस्था के नाम से भी जानी जाती है। यह अवस्था 13-19 वर्षकीआयु में बालक में विद्यमान रहती है। इस अवस्था में विभिन्न प्रकारकी भावनाओं का विकास होता है। इस अवस्था में छात्रों मे अनेक संवेगों एवं भावनाओं का विकास होता है। वे अपने अंदर इस समय अनेक प्रकार के परिवर्तनोंकीअनुभूतिकरते है। यह सभी परिवर्तन उनकी मौलिकता से प्रभावित होते है। विभिन्न प्रकार के सामान्य परिवर्तनों को इस समय वे अपने वाह्य एवं आंतरिक शरीर में उत्पन्न होता देखते है तथा उन्ही के अनुरूप उनका सर्वांगीण विकास भी होता है। इस समय बालकों

में कामेच्छा, भावना, चरित्र गुण आदि जैसे- विशेषत: गुणों का समिश्रण उत्पन्न होता है जिनका उपयोग करके वे अपने जीवन को उन्नतिकीऔर अग्रेसित करते है। यह देखा जाता है की किसी व्यक्तिकीबुध्दि कुशाग्र तथा किसीकीमंद होती है। उनकी बुध्दि कुशाग्र एवं मंद होने के पीछे उनकें संवेगों को प्रथम कारण माना जाता है। बौद्धिक विकास व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के सूचक रूप में माना जाता है। जिस व्यक्ति में बौद्धिक रूप से विकास नही होता है वह कभी भी अपना अन्य विकास भी नही कर सकता। किशोरावस्था को विकासकीचरम सीमा से भी नवाजा जाता है। यह व्यक्ति के चतुर्मुखी विकासकीसीमा होती है। व्यक्ति इस अवस्था में आकर विकास क्रम को चारों औरसे करता है। इस समय उसमे किशोर-कालीन सभी गुणों का समिश्रण दिखाई देता है। इस प्रकार किशोरावस्था भी बालक के विकासकीएक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है**(शर्मा एवं हूडा 2007)**।

1.2 कुसमायोजन:-

कुसमायोजन का अर्थ होता है जब बालक वातावरण से सामजस्य स्थापित करने में असमर्थ होना है। जिस समय व्यक्ति अपने जीवन में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान करने `में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है, उस स्थिति को कुसमायोजन कहा जाता है**(शर्मा एवं हूडा 2007)**।

1.2.1 कुसमायोजन के कारण:-

कुसमायोजन बालककी वह स्थिति मानी जाती है, जब वह समाज के साथ तथा अपने वातावरण के साथ स्वयं का सामजस्य स्थापित नही कर पाता। औरयही उसकी असामजस्यकीस्थिति होती है जिसके कारण उसका सर्वांगीण विकास नही किया जा सकता। वह अपने विकास में अनेक बाधाओं को अपने समक्ष उपस्थित होता हुआ देखता है। कुसमायोजन के कारण निम्नलिखित है -

i. **इच्छा आवश्यकता पूर्ति न होना-** व्यक्ति में कुसमायोजनकीभावना उस समय उत्पन्न होती है जब उसकी किसी इच्छा तथा भावनाकीपूर्ति नही हो पाती। जिसके कारण उसके मन में विशेष प्रकार की सांवेगिक भावना उत्पन्न होती है और वह अपने को आत्महीन समझना सुरु कर देता है।
ii. **व्यक्तिकीपरिवारिक सुरक्षा-** अपने परिवार से सर्वप्रथम सहानुभूतिकीमांग,अधिक सुरक्षाकीमांग, प्यारकीमांग, सुरक्षाकीमांग आदिकीजाती है। वह इन सभी मांगो के आधार पर अपने जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास करता है। यदि उसे इन सभी मांगोकीपूर्ति में किसी

बाधा उत्पन्न होती हुई दिखाई देती है तो वे कुसमायोजन की भावना से पूर्ण रूप से ग्रसित हो जाता है। उसके मन में तनाव उत्पन्न होने लगते है औरवह असामान्य व्यवहार करने लगता है।

iii. **व्यक्ति में विभिन्न प्रकार-** के संवेगों का उत्पन्न होना स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। वह संवेगों के कारण ही अपना विकास तथा पतन करता है यही संवेगकीभावना उसे उदार एवं क्रोधी बनाने का कार्य करती है। व्यक्ति में अनेक प्रकार के संवेगोंकीपुष्टि होती है, जैसे- क्रोध भावना, भय भावना, अशांति, शांति, असंतुष्टि, संतूष्टि प्यार, कामेच्छा, प्रेम, दया, सहानुभूति, नैतिक, सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्तिया आदि।

iv. **शारीरिक एवं मानसिक कमजोरियाँ-**व्यक्ति में अपनेप्रति भी असमंजस्यकीस्थिति उत्पन्न हो जाती है प्रत्येक व्यक्ति में यह भावना विद्यमान होती है की वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से पूर्ण हो। उसके शरीर में तथा मस्तिष्क में तथा किसी प्रकार का तनाव न हो और वह अपने जीवन का पूर्ण आनंद प्राप्त करने में समर्थ रहे। व्यक्तिकीयह भावना स्वाभाविक मानी जाती है। परन्तु ऐसा संभव नहीं हो सकता। व्यक्ति को समय-समय पर अनेक समस्याएँ और शारीरिक दु:ख-दर्द से घेरे रहते है। इनसे समायोजन न बिठाने के कारण भी व्यक्ति को कुसमायोजनकीस्थिति का सामना करना पड़ता है **(शर्मा एवं हूडा2007)।**

1.3 समसामायिक समस्या:-

किशोरावस्था कठिन समय तथा अनेक परिवर्तनों का भी समय माना जाता है| इस अवस्था कु-समायोजन से छात्रों में भग्नाशा, नैराश्यता दिखाई देती है| यह उनके सामने आने वाली सांवेगिक समस्या के साथ समायोजित न कर पानेकीवजह से होती है| जिनके कारण आत्महत्या तक करनेकीकोशिश करते है| किशोरावस्था में आनेवाली समस्याएँ कई प्रकार के हो सकती है| आज कल के प्रतिस्पर्धात्मक तकनीकि वातावरण के कारण किशोरों के पारंपरिक समस्याओं के अलावा कई नई समस्याएँ पैदा हो रही है, जो किशोरों में तनाव पैदा कर रही है**(भारद्वाज, विनय, इंडियन एक्सप्रेस-21अप्रेल2017)**जैसे -

1.3.1 भग्नाशा या कुण्ठा:-

भग्नाशा या कुण्ठाकीभावना से अभिप्राय व्यक्ति में व्याप्त उस भावना से है जिस समय वह किसी अपेक्षाकृत परिणामों को प्राप्त करने में असफलता प्राप्त करता है| व्यक्ति में व्याप्त किसी विषय के संबंधमें प्राप्तकीजाने वाली सफलताकीआशा उसमे नविन चेतना का प्रादुर्भाव उत्पन्न करने का कार्य करती है| परन्तु यदि वह अपने द्वारा निर्धारित करने वाले लक्ष्योंकीप्राप्ति में किसी भी

प्रकारकीअसफलता प्राप्त करता है तो उसमें इस समय भग्नाशाकीभावना उत्पन्न होती है| इस भावना का प्रादुर्भाव व्यक्तिकीअसफलताकीभावना के कारण होता है| व्यक्ति जिस समय किसी कार्य विशेष में असफलता प्राप्त करता है उस समय उसे ऐसी भावना का सामना करना पड़ता है **(शर्मा एवं हूडा, शिक्षा कोश, पृष्ठ 327, के.एस.के.पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स,दिल्ली, 2007)|**

1.4अकादमिक तनाव:-

छात्रों में भग्नाशा निर्माण का एक प्रमुख कारण इस अवस्था में अभिभावकों तथा मित्रों में यह अपेक्षा रहती हैकीछात्र जो करता है उसमे सर्वोत्कृष्ट करे। उन्ही कारण से अभिभावकों का लक्ष्य छात्रवृत्ति, पुरस्कार, आदि में रहती है जिसके वजह से छात्रों का तनाव विभिन्न कक्षाओं श्रेणी, परीक्षाओं के द्वारा और अधिक होता है|अकादमिक तनाव को आमतौर पर परीक्षाओं या निरंतर आकलन के माध्यम से मापा जाता है, लेकिन इस पर कोई सामान्य सहमति नहीं है की यह किस प्रकार सबसे अच्छा मूल्यांकन है या कौन से पह्लुओं को सबसे अधिक महत्वपूर्ण है- प्रक्रियात्मक ज्ञान जैसे की कौशल या घोषणात्मक ज्ञान।

I. बच्चों पर पढ़ाई का अत्यधिक दबाव (Academic Stress):-

यदि हम प्राचीन समय में देखें तो पता चलेगाकीउस दौर में शिक्षा प्रणाली सरल थी। प्राचीन समय में इसके तनावपूर्ण होने का भी कोई संकेत नही मिलता है।लेकिन अबभारत में शिक्षा प्रणाली बदल गयी है और आज के दौर में पढाई तनावपूर्ण हो चुकी है। अब भारत में शिक्षा चुनौतीपूर्ण, प्रतिस्पर्धात्मक हो चुकी है और परिणाम को ज्यादा महत्व दिया जाता है। बच्चोंकीयोग्यता का मूल्यांकन शैक्षिक प्रदर्शन पर किया जाता है इसकी वजह से पढ़ाई को लेकर आनंद अब जुनून में बदल चुका है। छात्रों पर अच्छा प्रदर्शन और टॉप करने के लिए दबाव बना रहता है, कई बार ये दबाव परिवार,भाई-बहन औरसमाज के कारण होता है।

1.4.1 तनाव के कारण:-

तनाव का सामना करने के लिए छह तरीके-

I. नकारात्मक विचार / स्थितियों से दूरी- तनावपूर्ण स्थिति को हमेशा के लिए नहीं रोका जा सकता। यह हमारे जीवन का एक हिस्सा है। "इससे बचने" का मतलब है कीनकारात्मक विचार / स्थितियों या लोगों से कुछ समय के लिए थोड़ी दूरी बनाना।

II. गतिविधि- कोई भी गतिविधि जो आपको पसंद है और जिसमे आप खुश रहते हैं उसमें व्यस्त रहें। इस प्रकार आप उन विचारों से दूर रहेंगे जो आपको परेशान करते हैं। यह संगीत, खेल, फिल्म, योग, नृत्य औरव्यायाम हो सकता है।

III.विश्लेषण करें- अपने कमजोर और मजबूत हिस्से पर ध्यान दें। यदि आप अपनी कमजोरियों को जानते हैं तो उनपर काबू पाने कीकोशिश करें। यदि उन पर काबू नहीं पा रहे हैं, तो अब उसपर काम करना शुरू करें।

IV. स्वीकार करें- "तनाव" सबको होता है ये सामान्य औरअनिवार्य है। कुछ खास वजह जैसे किसी विषय, लोग, स्थिति औरबीमारी में तनाव होता है। आप इसे बदल नहीं सकते। लेकिन उस स्थिति को जिस तरह से वो है उसी रूप में स्वीकार करें और आगे बढ़ें।

V. प्रयास- आप एक ही दिन में सभी तनाव को संभालने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। हमेशा ये कहावत याद रखें "प्रयास करें औरअसफल हो लेकिन प्रयास न करने में असफल कतई न हों"।

VI. नज़रिया- हर तनावपूर्ण स्थिति को सकारात्मक रूप से देखें और उसे एक अवसर समझें। खुद के लिए उचित मानक तय करें। धीरे-धीरे प्रगति करें। खुद को बधाई दें जब आप सफलतापूर्वक किसी भी तनावपूर्ण स्थिति को संभाल लें। यह आपके आत्मविश्वास को बढ़ावा देने और आगे इस तरहकीपरिस्थितियों का सामना करने के लिए आपको मजबूती देगा।

डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के अनुसार-*"यह मेरा विश्वास है कि जब आपकआशाएं, सपने और लक्ष्य धराशायी हो रहे हो तो उसमे कठिनाइयों और समस्याओं के माध्यम से भगवान हमें विकास करने का अवसर देते है।"*

1.5 सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव:-

वर्तमान में मोबाइल फोन औरइंटरनेट ने हमारे जीने के तरीके को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। हम चारों तरफ से मोबाइल औरइंटरनेट से घिरे हुए है। सोशल नटवर्किंग साइटस ने तो जैसे- हमको पूरी तरह काबू में कर लिया है। मोबाइल फोन फेसबुक और इंटरनेट पर हमारी एक अलग ही दुनिया है। यह एक ऐसे लोगोंकि दुनिया जिन्हे हम ठीक से जानते भी नहीं है। सोशल मीडियाकीवर्चूअल दुनिया में किसी भी कोने में रहने वाला व्यक्ति हमारा दोस्त बन जाता है। हमारे पास इतना भी वक्त नहीं होता की हम अपने आस-पास रहने वाले लोगों का सुख-दुख बांट सके। खासकर युवा वर्ग के छात्र-छात्राएं 24 घंटे मे से 16-16 घंटे इन सोशल साइट्स पर आँनलाइन रहते है।

आज कल सोशल मीडिया किशोरों में तनाव पैदा करने वाला प्रमुख साधन बन चुका है| किशोरों द्वारा सोशल मीडिया में पोस्टकीगई चित्र, कार्य के प्रति प्रतिक्रिया एवं पसन्दकी संख्या उनके तनाव का कारण बनाता है| सोशल मीडिया के द्वारा किशोर स्वत: के प्रति सामाजिक ग्राह्यता को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है जिसके अभाव से वह तनाव ग्रस्त होता है **(भारद्वाज, 2017)|**

सोशल मीडिया के प्रभावजिस तरह हर चीज के दो पहलू होते है एक सकारात्मक और एक नकारात्मक ठीक उसी तरह सोशल मीडिया दोनों तरह से हमारे युवा वर्ग को प्रभावित कर रहा है। **1.5.1 सकारात्मकप्रभाव-** सकारात्मक पहलुओं को हम इस रूप मे देख सकते है-

1- इससे हर तरहकीसूचना हमें मिलती है।
2- हर तरह का सामाजिक मुद्दा इसके जरिए उठाया जा सकता है।
3- सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सोशल मीडिया ने काफी मददकी है।
4- युवा वर्ग अपनी आवाज को लाखों लोगों तक सोशल मीडिया के जरिए पहुंचा सकता है।

1.5.2 नकारात्मकप्रभाव-नकारात्मकपहलुओं को हम इस रूप मे देख सकते है-

1- बहुत सी अफवाये इन साइट्स के द्वारा फैलती है।
2- युवा वर्ग लगातार इनके प्रयोग से डिप्रेशन का शिकार हो रहा है।
3- हमारी दिनचर्या के बहुत से काम इसकी वजहकीवैबसाइट पर व्यस्त रहने से अधूरे रह जाते है।
4- इससे न जाने कितने ही युवा गलत आदतों के शिकार हो जाते है।
5- इससे साइबर क्राइम को भी बढावा मिल रहा है।

1.5.3 हरियाणा मे सोशल मीडिया का दौर-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने जब से डिजिटल इंडियाकीमुहीम चलायी है तबसे भारत मे सोशल मीडिया नें एक नयी गति पकड़ ली है। देश के हर कोने में इन्टरनेट के पहुँचने होने से देश का हर दूसरा व्यक्ति सोशल मीडिया तक अपनी पहुंच बना रहा है। फेसबुक ट्विटर व्हाट्सप का प्रयोग दिनोंदिन बढ़ रहा है। यहाँ तककीरेलवे में भी ट्विटर जैसी सोशल साइट्स के जरिए सहायता दी जाने लगी है। जहां देश में सोशल मीडिया ने अपना प्रभाव दिखाया है। वहीं हरियाणा भी इस सोशल मीडिया से अछूता नही रहा है।21 जिलों वाले इस राज्य का प्रत्येक जिला सोशल मीडिया से जुड़ा है। सरकार द्वारा चलाई जा रही हर योजना सोशल मीडिया के द्वारा लोगों तक पहुंच रही है। हरियाणा से जुडे कुछ ऐसे मुददे् जिनको बिना सोशल

मीडियाकीसहायता के बिना उठाया भी नही जा सकता था। हरियाणा के जिले रोहतक का निर्भया कांड जिसमे इंसानियतकीसारी हदे पार कर दी गई थी उसे सोशल मीडिया के जरिये उठाया गया और पीडिता को न्याय भीदिलाया गया।हाल ही में हरियाणा के विभिन्न जिलों मे उठी जाट आरक्षणकीमांग को सोशल मीडिया के कारण बहुत बढावा मिला जिसके चलते सरकार को प्रभावित जिलों में इंटरनेटकीसुविधा बंद करनी पड़ी। लोकसभा चुनाव के दौरान राज्य मे सोशल मीडिया का अच्छा असर देखने को मिला।मोदी जी द्वारा हरियाणा के सोनीपत जिले से चलाए गए अभियान को सोशल मीडिया के द्वारा काफी बढ़ावा मिला। पूजनीय गौमाता की रक्षा के लिए हरियाणा में सोशल मीडिया के कारण बढावा मिला।

1.6 किशोरावस्था कीसमस्यायें:-

1.6.1 सामाजिक समस्या-आज सामाजिक समस्याओं को किशोरावस्था का ही एक भाग माना जाता है। 'सामाजिक समस्या' शब्द उसी 'विषय' के लिए उपयोग किया जाता है, किशोरावस्थाकीसमस्याओं का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसमे परिवार का समाजकीस्थिति, अपराध औरअपचार का समाजशास्त्र सामाजिक समस्या घटनाओं का समूह या दशा है, जिसे समाज कुछ लोग अवांछनीय मानते है। किशोरावस्था के एक वर्ग या समूह के समक्ष उत्पन्न स्थिति, जिसके हानिकारक परिणाम होते है और जिससे केवल सामूहिक प्रयासों से ही निपटा जा सकता है, को सामाजिक समस्या के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। समय के साथ-साथ सामाजिक समस्याएँ बढती रहती है। जो कुछ दशकों पहले सामाजिक समस्या नही मानी जाती थी, वह दो दशकों पश्चात एक कमजोर समस्या बनती जा रही है।

किशोरोकीसामाजिक समस्या विविध संबंधोकीवह समस्या है जो समाज को संकट में डालती है या कई किशोरोंकी आकांक्षाओं को प्राप्त करने में रुकावट पैदा करती है। सामाजिक समस्या उस समय उत्पन्न होती है जब हम किसी कठिनाई के प्रति चेतन हो जाते है और जब अभिरुचि और यथार्थता के बीच खाई आ जाती है।

1.6.2आर्थिक समस्या-परिवारकीआर्थिक स्थिति अच्छी न होने से भी छात्र में असमायोजनकीस्थिति उत्पन्न होने का भय रहता है। वह अपने परिवारकी आर्थिक स्थिति के प्रति चिन्तित रहता है और उस स्थिति के साथ वह सामजस्य स्थापित करने में अपने को सक्षम नही समझता। यह स्थिति उसे मानसिक अस्वस्था प्रदान करती है। अत: विद्यालय में उसे नि:शुल्क शिक्षा

व्यवस्था प्रदान कीजानी चाहिए ताकि वह शिक्षा को अपने ऊपर बोझ न समझे**(शर्मा एवं हूडा, शिक्षा कोश, पृष्ठ 321, के.एस.के.पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2007)**।

1.6,3पारिवारिक समस्या-परिवार में व्यक्ति का जन्म होता है। वह परिवार के सदस्यों से मिल-जुल कर व्यवहारकीभावना सीखता है। परिवार ही उसके जीवन में उन्नतिकीप्रथम सीढ़ी माना जाता है। यदि व्यक्ति को परिवार से भिन्न कर दिया जाता है तो वह अपना विकास करने में असमर्थ रहता है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है। परिवार के सदस्य बालक को स्नेह प्यारकीभावना से ओत-प्रोत रखे। समय-समय पर आने वाली समस्याओं एवं मानसिक रूप से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निराकरण करने के लिए पारिवारिक सदस्यों के द्वारा बालक को स्नेहपूर्ण शिक्षा प्रदानकीजानी चाहिए। इस प्रकार परिवार के सदस्यों के द्वारा कुसमायोजित बालक को सहायताकीजा सकती**(शर्मा एवं हूडा, शिक्षा कोश, पृष्ठ 320, के.एस.के.पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2007)**।

i. **पारिवारिक कलह-** आज के पारिस्थिति में माता-पिताओं में विवाह विच्छेद का विषयआम हो गया है, एवं एकत्रित परिवारकीसंकल्पना नष्ट हो चुकी हैं| जिससे दादा-दादी तथा अन्य परिवारजनों का प्रतिरोधनात्मक उपदेश किशोरों को प्राप्त नही हो पा रहा है| जिस परिवार में एक सदस्य दुसरे के साथ स्नेहपूर्वक पेश नही आता तथा परिवार के सदस्य एक-दुसरे का आदर नही करते है| ऐसे परिवार के बालकों का पिछड़ना स्वाभाविक माना जाता है **(शर्मा एवं हूडा, शिक्षा कोश, पृष्ठ 364,के,एस.के.डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2007)**|

II. **परिवार में स्थान**(position)**-**बालक का विकास इस बात पर निर्भर करता है की परिवार में उसकी स्थिति क्या है? प्राय: देखा गया है की पहला बालक अथवा अंतिम बालक विशेष लाड़प्यार से पाला जाता है। सीखनेकी इच्छा तक बात है, छोटे बच्चे अपने बढे भाई-बहिनोंकीअपेक्षा शीघ्र सीखते है**(मिश्र,दिवाकर,शिक्षा मनोविज्ञान,पृष्ठ 44,अपोलो प्रकाशन,जयपुर,2008)**।

1.6.4 शैक्षिक समस्या-आज के वर्तमान सामाजिक परिवेश में किशोर कुछ औरही विशेष समस्याओं का शिकार हो रहे हैं।उनमे एक प्रमुख है- बच्चों के जीवन में अकेलापन।किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य युवाओं को वास्तविक जीवन परिस्थितियों में सकारात्मक और उत्तरदायी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए सटीक, आयु उपयुक्त तथा सांस्कृतिक दृष्टि से संबंधित सूचना, स्वस्थ मनोवृत्ति तथा कौशल विकसित करने में सक्षम बनाकर उन्हें सशक्त

बनाना है।इसका उद्देश्य छात्रों और अध्यापकों के बीच उत्तरदायी व्यवहार से संबंधित विकास मामलों तथा जनसाधारण मुख्यत: अभिभावकों और समुदायों के बीच परोक्ष रूप से सकारात्मक मनोवृत्ति तथा जागरूकता विकसित करना है।

किशोरावस्था अर्थात उम्र का वह पड़ाव जहां किशोर मन पूरी तरह से परिपक्व नहीं होता।उम्र के इस पड़ाव में किशोर मन में उथल-पुथल चल रही होती है।किशोरावस्था शिक्षा विद्यार्थियों के किशोरावस्था के बारे में जानकारी प्रदान करनेकीआवश्यकता के सन्दर्भ में उभरी एक नवीन शिक्षा का नाम है। किशोरावस्था जो की बचपन और युवावस्था के बीच का परिवर्तन काल है।कुछ कर गुजरने का जुनून किन्तु अनुभवकी कमी एवं उचित मार्गदर्शन का अभाव उन्हें सही राह से भटका सकता है।इस अवस्था में किशोर तन में हो रहे जैवीय (biological) शारीरिक परिवर्तन का सीधा-सीधा असर उसके किशोर मन पर पड़ता है।प्रश्नों का एक समंदर सा मन में उथल-पुथल मचा रहा होता है।किन्तु उचित मार्गदर्शक का अभाव किशोर मन कीप्रश्न रुपी उत्कंठा को शांत नहीं कर पाता।इस अवस्था में किशोर अपने आस-पास के दोस्त या जिन पर वह भरोसा करता है उनसे प्रश्नों के समाधानकीउम्मीद करता है।किन्तु उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता की प्रश्नों के उत्तर या समाधान उसने प्राप्त किये हैं वे उसे सही दिशा में ले जाते हैं या नहीं।कई बार तो शंकावशकी दुनिया क्याकहेगीया फिर कोई क्या सोचेगा जैसे प्रश्नों में उलझकर अपनी उत्कंठाओं को दबाने पर विवश हो जाता है।

1.6.5व्यक्तिगत समस्या-अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण के व्यक्तिमत्व कारक का अर्थ वे कारक या निर्धारक है, जो लक्ष्य व्यक्तिकी विशेषताओं से सम्बन्धित होते है। यदि किसी व्यक्ति को नौकरी चाहिए औरउसको पाने के लिए उसे दूसरो के साथ प्रतियोगिता में भाग लेना पड़ता है, तो यह केवल एक व्यक्तिगत समस्या है।मादक द्रव्यों का सेवन, मदपान, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी, जनसंख्या विस्फोट, एड्स, असमानता, प्रदुषण, पर्यावरण, क्षरण, अपराध आदि मात्र व्यक्तिगत समस्याएँही नही है, जो एक व्यक्ति या एक समूह को प्रभावित करती है।

i. **दिवास्वप्न-** यह बालकों में विशेष रूप से किशोरावस्था में पाए जाते हैं| इन्हें बालककी तरंगमयी कल्पना कहकर भी सम्बोधित किया जाता है| यह उसके अपने द्वारा बनाया जाने वाला संसार भी कहा जाता है| इसमें केवल उसके ही व्यवहार एवं विचार चलते हैं| यह दिवास्वप्न असामान्य बालकों के व्यवहार का एक आवश्यक रूप माना जाता है**(शर्मा एवं हूडा. शिक्षा कोश, पृष्ठ 294, के.एस.के.पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2007)**|

ii. **स्वप्न देखने की प्रवृति-**कुसमायोजित बालक जिन परिस्थितियों को अपने सम्मुख सीधे प्रकार से उपस्थित नही होता देखता है वह उसे स्वप्न में उत्पन्न करनेकी कोशिश करता है| बालक में दिवास्वप्नोंकी भावना कुसमायोजन के कारण ही उत्पन्न होती है| वह स्थिति से सामजस्य स्थापित करने में अक्षमता प्राप्त करते है| कुसमायोजित बालक में अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले स्वप्नों को देखनेकीप्रवृति विशेष रूप से पाई जाती है|

iii. **अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण-**अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण का तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाले आकर्षण से है| आकर्षण का अर्थ दूसरे व्यक्ति के प्रति सकारात्मक मनोवृति है|आकर्षणकी व्याख्या करते हुए **चैपलिन (**Chaplin 1975**)** ने कहा है , "आकर्षण वह गुण है जो समान व्यवहार उत्पन्न करता है|" अर्थात आकर्षण का अर्थ साधारण: पसन्द स्नेह, मित्रता तथा प्रेम है|

iv. **व्यक्तित्व-शीलगुण-**अन्तरव्यक्तिगतआकर्षण का शारीरिक आकर्षकता भी अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक (determinant)है|इसे विकिरणकारी प्रभाव (radiating effect)कहते है| लिंग साथी (sex partnars)के चयन में शारीरक आकर्षण का महत्व विशेष रूप से देखा गया है| यह बात पुरुष तथा स्त्री दोनों के लिए साथ है (Shepperd & Strathman,1989)|

v. **शारीरिक आकर्षकता**(Physical attractiveness)-लक्ष्य व्यक्ति का शारीरिक आकर्षकता भी अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक (determinant)हैइसे विकिरणकणकारी प्रभाव भी (radiating effect)कहते है| लिंग-साथी (sex partners)के चयन में शारीरिक आकर्षण का महत्व विशेष रूप से देखा गया है| यह बात पुरुष तथा स्त्री दोनों के लिए सत्य है (Shepperd&Strathman,1989**)(सुलैमान 2005,पृष्ठ 398)|**

vi. **समीपता-**समीपता या निकटताकी स्थिति में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिकी और आकर्षित होता है तथा उसे पसन्द करता है| यह एक वास्तविकता है कि हम अपने पड़ोस के लोगों को अधिक पसन्द करते है तथा उनकी और आकर्षित होते है| इस संबंध में किये गये अध्ययनों से किये गये इस विचार का समर्थन होता है|

vii. **आत्मविश्वास-** आत्मविश्वास व्यक्ति का एक आवश्यक गुण माना जाता है| आत्मविश्वासी व्यक्ति ही जीवन में उन्नति के शिखर को प्राप्त करता है| आत्मविश्वास का अर्थ व्यक्ति का- वह गुण है जो वह अपनी आत्मा के आधार पर अपने अन्दर विकसित करता है| आत्मविश्वासकी भावना व्यक्ति को बड़ेसे बड़ा कार्य करने के लिए प्रेरित करती है| आत्मविश्वास के आधार पर

ही व्यक्ति अपनी उन्नति के मार्गों में आने वाली विभिन्न समस्याओं को दूर करने का कार्य करता है| आत्मविश्वास व्यक्ति के चारित्रिक गुणों का एक विशेष लक्षण माना जाता है|

viii. **मित्र समूह समस्या-**किशोरावस्था वह समय में बालक चाहता हैकीउसको वह अच्छा लगता है उसका वह अनुकरण करे तथा उसमे उसकी स्वतंत्रता मिले| इस अवस्था में वे अपने मित्र परिसर में अधिक प्रसिद्ध एवं आदरकी भावनाकी अपेक्षा रखते है जिसके लिए वे विभिन्न शैली(style) वेशभूषा, रंग-ढंग को अपना रहे है जिसके विरोध करने से उनमें तनाव का लक्षण दिखाई देता है **(मंगल, 2011)**|

ix. **मित्रता तथा प्रेम(Frienship and love)-**अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण(interpersonal attraction) के संबंधमें आनुभविक तथ्य(empirical facts) के साथ-साथ अपवादों(excepctions)की व्याख्या भी करने में सफल है| नजदीक रहने पर भी दो व्यक्तियों के बीच आकर्षण नही भी हो सकता है| दों व्यक्ति एक-दूसरे केबीचनिन्दक होने पर भी मित्र रह सकते है| आखिर ऐसा क्यों? विनिमय-सिद्धांत(exchange theory)इन समस्याओं का समाधान मित्रता-निर्माण के विश्लेषण(analysis)के माध्यम से करता है| मित्रता-निर्माण में प्रतिचयन तथा मूल्यांकन(sampling and estimation),समझौता(bragaining), समर्पण(commitment) तथा संस्थापनकीप्रक्रियाएँ(processes)शामिल होती है**(उच्चतर समाज मनोविज्ञान,सुलैमान,2007,पृष्ठ 410)|**

x. **प्रेम-संबंध-**"प्रेम हे सुंदर स्वप्न ही नहीं, प्रेम हे क्षणिक शरीर सुखही नहीं, प्रेम यह दों मनों का मिलन है, दो अपूर्ण व्यक्तियों को एक-दुसरे में घुल-मिल जानेकि जो क्षमता रहती है, उसीका नाम प्रीति है" **(धुर्वे, राजेश. *दोन शब्द*..)|**किशोरवस्था में यह आम बात हैकीविपरीत लिंग के प्रति आकर्षण अधिक होता है| आज के परिस्थिति में बढती तकनीकि सुविधा के कारण अधिक मात्रा में प्रेम विच्छेद एकतरफा आकर्षण आदि समस्यायें दिखाई देती है जो विशेष रूप से किशोरों में तनाव को बढ़ावा देता है|

जन्म लेते ही बालक अपने माता-पिता एवं अन्य सगे-सम्बन्धियों का प्रेम प्राप्त करता है| यह प्रेम वह दूसरों से प्राप्त करता है औरइसके बदले में दूसरों को प्रदान करता है, उसके जीवन के संवेगात्मक विकास में अत्यधिक महत्व रखता है| जैसे ही वह आयु में उन्नति करता है, वह विभिन्न वस्तुओं और व्यक्तियों के प्रति विभिन्न अंशो में स्नेह का अनुभव करता है|उसका प्रेम उन सब वर्ग के लोगो अथवा संस्थाओं जैसे-कुटुंब,पड़ोस,ग्राम,मुहल्ला,राष्ट,आदि से होने लगता है जिससे उसका सम्पर्क स्थापित होता है| व्यक्ति को अपने बच्चो के प्रति स्नेह जन्मजात तथा स्वाभाविक होता है|

प्रेमकी परिस्थिति में भी आकर्षण देखा जाता है| अधिक तीव्र प्रेमकी स्थिति में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति कों पसन्द करता है तथा उसकी और आकर्षित होता है| कई अध्ययनों से संवेगात्मक अनुभूतियों के सामाजिक प्रसंग का महत्व प्रमाणित होता है (Gordon,1981;Schvert,1987)लेकिन,पसन्दगी तथा प्रेम केबीचसदा सकारात्मक संबंध (positive reiationship) नही होता है| कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी होती है, जहाँ हम किसी व्यक्ति के साथ तीव्र प्रेम नही भी होनें पर उसे पसन्द करते है और उसकी और आकर्षित होते है| इस प्रकार स्पष्ट हुआ की पसन्दगी (liking) तथा आकर्षण के उपयुक्त कई परिस्थितिजन्य निर्धारक या कारक है| लेकिन, इसके अतिरिक्त भी कई पारस्परिक क्रिया कारक (interactional factor)है, जिनका निश्चित प्रभाव अन्तरव्यक्तिगत आकर्षण पर पड़ता है**(उच्चतर समाज मनोविज्ञान, सुलैमान, 2007,पृष्ठ 401,402)|**

1.7 किशोरावस्था में समस्याओं के कारण:-

किशोरावस्था की अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में होती है, उनके मात्रा(degree), आवृत्ति**(frequency),** अवधि (duration)एवं (seriousness) में भी विभिन्नता पाई जाती है। इसके अनेक प्रकार हो सकते है। अन्य सामाजिक व्यवहारोंकी भांति किशोरावस्था के मूल में भी अनेक जटिलतायें है। अक्सर इसका स्वरुप अस्थाई(transitory)होता है। भावी किशोरावस्थाकीसमस्या को रोकने का सर्वोत्तम तरीका किशोरावस्था में उनकी पथभ्रष्टता पर प्रतिबन्ध लगाना है। आज का किशोर राष्ट का भावी नागरिक है, उसे एक उत्तरदायी एवं संवेदनशील नागरिक बनाने के लिये प्रेरक वातावरण(conductive environment)उपलब्ध कराना चाहिए। यदि किसी किशोर का पालन-पोषण अस्वास्थकर वातावरण में होता है, तो वह असत्य मानको एवं मूल्यों को आत्मसात(assimilate)कर लेता है। परिणामस्वरुप आगे चलकर उसे सत्य मार्ग का अनुसरण करना एक कठिन कार्य हो जाता है। यह एक सामान्य ज्ञानकीबात हैकी अधिकतर पौढ़ अपराधी अपने किशोरावस्था में कोई न कोई अपराधिक व्यवहार अवश्य किये रहते है, जो एक किशोरावस्था में पलायन के व्यवहार के लिए वह प्रेरित होता है।

जब तक समस्या के कारण का सज्ञान एवं तदात्मिकरण हो जाय, तब तक किशोर समस्या का रोक-थाम नही किया जा सकती है। अत: यह प्रश्न उठना बिल्कुलप्रासंगिक हैकीसामाजिक अनुमोदन(social sanction)अथवा कानून (law) के उल्लंघन के कारण कौन से है---- कारण का अभिज्ञान किये बिना किशोरावस्था एक सामाजिक व्याधि(social disease) नही माना जा सकता।

समस्या के विषय वस्तु के संदर्भ में वस्तुनिष्ठ अथवा वैज्ञानिक प्रदत्त प्राप्त करना एक कठिन कार्य है क्योंकि समस्याकी आवृत्ति एवं परिस्थिति के बारे में अधिक सत्य चित्र उपलब्ध नही है। किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसके संदर्भ में नागरिकों, समाज सुधारकों, मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों एवं शिक्षा शास्त्रियों के ही ध्यानकी आवश्यकता नही है, वर्णा राष्ट्रकी औरसे इस दिशा में सार्थक प्रयासकी आवश्यकता है क्योकि समस्या के कारणों का स्वरुप अपेक्षाकृत अधिक जटिल है।

इस सत्य से इन्कार नही किया जा सकताकी सभी देशों के कानून एवं व्यवस्था में द्वारा प्रत्यक्षीकृत किया गया है। समाज में पायी जाने वाली विकृति(disorder) एवं अन्तद्वन्द्व (conflict)ने मानव जीवन को पूर्ण रूप से प्रभावित कर लिया है जिसमें आज के सामाजिक जीवन में सामाजिक तनाव एवं नियमहिनता प्रचुर मात्रा में देखी जा सकती है परिणामस्वरुप सामाजिक मानकों के प्रति विचलन प्राप्त किया जा रहा है।

1.7.1 जैविक कारण:-

जैविक कारकों में अनेक अन्य महत्वपूर्ण जैविक कारक है जो किशोर की समस्यान्मुखता में वृध्दि करते है। नेत्रिय रोग (ocular ailments), किशोरों में चिड़चिड़ाहट (irritability) उत्पन्न करता है जिससे किशोर में अस्त-व्यस्तता औरअशांति (discomfort) पाया जाता है। परिणामस्वरूप किशोर अपने जीवन को सुगम बनाने वाले ज्ञान को अर्जित करने का प्रयास नही करते है (Matza,1969)।नाक और गलेकीसमस्या (nose and throat problem)के कारण किशोर अशक्तता (weakness)और अशांति अनुभव करता है जिससे उसमें किसी कार्य के प्रति आकर्षण का अभाव पाया जाता है और वह विद्यालय से पलायन (truancy)करता है वह नाक साँसनही ले पता है, इसलिए वह मुहँ से सास लेता है। इसलिए किसी कार्य को करते समय अक्षमता (inefficiency)अनुभव करता हैसुनने में कठिनाई होने के कारण अपने को अक्षमसमझने लगता है जिससे उसके कार्य करनेकि योग्यता बाधित होती है, तथा वह दूसरों पर सहायता के लिये निर्भर रहने लगता है जो असामाजिक कार्यों के प्रति उनकी उन्मुखता में वृद्धि करता है। इसी प्रकार वाणी समस्या(speech problem)के कारण भी किशोर समाज में दया(pity)अथवा हास्य (laugh) का पात्र बनता है जो उसमें हीनताकी भावना(feeling of inferiority)को जन्म देता है जिसकी परिणति उसके द्वारा किये गये असामाजिक व्यवहारों के रूप में होती है। असयंतमुत्रता (enuresis)मूत्राशय विकृति के कारण पाया जाता है जिसमें किशोर में अशांति पाई जाती है और वह असामाजिक

कृत्योंकि और अग्रसर हो जाता है। Montague(1941) का मत है रक्त में शर्करा (glucose)के निम्न स्तर के कारण उत्पन्न से मानसिक असंतुलन पाया जाता है जिससे किशोरकीचेतना (consciousness),स्मृति(memory) एवं उन्मुखता (orientation) के स्तर में व्यवधान उत्पन्न हो जाता है जो किशोर को मारपीट(assault) हिंसा (violence)शांति भंग (breach of peace), आत्म-हत्या, नर हत्या(homicide), मध आसक्ति, काम-विकृति(perversion), चोरी, शरारत, आगजनीएवं झूठी निंदा (slander)जैसे- असामाजिक एवं अपराधिक कार्यों के लिये प्रोत्साहित करते है।

1.7.2 गतिशीलता (mobality):-

समाज में पाये जाने वाले अपराध-कारणत्व (crime causation) में गतिशीलता (mobality)कारककी महत्वपूर्ण भूमिका है।औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरणकि तीव्र गति ने संचार, माध्यम, यात्रा सुविधा, प्रेस एवं मंच (press and platform)के द्वारा विचारों का प्रसार-प्रसार को बहुत सरल एवं सहज बना दिया है। नये स्थानों पर व्यक्तियों के अजनबी (stranger)होने के कारण उनके पकड़ें जानेकि संभाव्यता कम होती है जिससे उन्हें अपराधिक कार्यों का अवसर अधिक प्राप्त होता है।

1.7.3 सांस्कृतिक अन्तद्वन्द्व (cultural conflicts):-

गतिशील समाज में सामाजिक परिवर्तन एक अपरिहार्य गोचर है। आधुनिकीकरण, नगरीकरण एवं औधोगिकीकरण के प्रभाव के कारण समाज में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है| जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक विघटन (social disorganisation)हुआ है जिससे समाज के अनेक वर्गों ने सांस्कृतिक अन्तर्व्द्वदप्राप्त किया गया है। अपराध-गति (crime rate)पर अप्रवासन (immigration)का अधिक प्रभाव पड़ता है। निवार्सियों (inhabitants)एवं अप्रवासियों (immigrants) में के कारण विचलित व्यवहार जैसे- मधआसक्ति के कारण आवारागर्दी (loitering drunkness)एवं यौन अपराध के पाए जानेकी सम्भावना बढ़ जाती है (chauhan & ferdin and 1981)। 1947 में भारत-पाक विभाजन के समय भारत आये सिंधियों नें तथा 1971 में बांग्लादेश से आये शरणार्थियों ने भारत के पारम्परिक सामाजिक-सरंचना को तहस-नहस कर दिया औरअपराधकी गति में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हुई।

1.7.4 पारिवारिक पृष्ठभूमि(family blachground):-

समाज में समस्याओं को उत्तेजित(incite) एवं प्रोत्साहित (encourage) करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक पारिवारिक पृष्ठभूमि भूमि भी है। किशोरों के अपराधिक व्यवहार पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता हैं (sutharland & cressey 1949)।परिवार जनों के द्वारा किये जा रहे कुव्यवहार को किशोर आत्मसात (imbibe) कर लेते है। परिणामस्वरुप असामाजिक कार्यों के प्रति उनके उन्मुखता में वृद्धि पाई जाने लगती है। भग्न-परिवार, माता-पिता के नियत्रण का अभाव, तलाक, माता-पिता का पलायन(desertion) माता-पिताकी अज्ञानता (ignorance) अथवा अस्वस्थता (ilness) माता-पिताकी आपस में तकरार, परिवार में अधिक प्रसव, माता-पिताकि अनैतिकता, परिवार का निम्न आर्थिक स्तर, परिवार में पिताकीदीर्घकालीन अनुपलब्धता, आदि-जैसे महत्वपूर्ण कारक किशोर के द्वारा किये जाने वाले अपराधिक कार्यों को सुकर (facilitate) बनाने हेतु प्रशमित आधार (soothing background)प्रधान करता है। इसी प्रकार पारिवारिक पृष्ठभूमि में संबंधित कुछ अन्य कारकों का प्रसर्जन(emanation)भी हुआ हैं जिनको किशोरावस्था के लिये उत्तरदाई मन जा सकता है।

1.7.5 पारिवारिक संरचना (family structure):-

बच्चे के सामाजिकरण तथा विभिन्न प्रकार के अधिगम का प्रमुख स्त्रोत-परिवार को एक महत्वपूर्ण परिपत्य के रूप में समाजशास्त्रियों एवं समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा स्वीकार किया जा रहा है। बालक के व्यक्तित्व सरंचनाकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। उपयुक्त प्रकार्य वाला परिवार बालकों के उपयुक्त विकास में सहायक होता है, परिवार उनके आत्मविश्वास में वृध्दि करता है, उन्हें स्पष्टवादी बनाता है तथा उन्हें जीवनकी यथार्थता का सामना करना बनता है। उन्ही परिवारों में किशोरावस्था का विकास होता है जहाकी पारिवारिक संरचना अनुपयुक्त और विकृत होती है (carr 1950; srivastava 1966)। ingram (1974) ने अपने अध्ययन में बालककीसमस्या व्यवहार पर पारिवारिक संरचना के महत्वपूर्ण प्रभाव को प्राप्त किया है। Dournbushs et.al (1985) ने अपने अध्ययन में विचलित व्यवहार पर पारिवारिक संरचना एवं निर्णयन दोनों के सार्थक का प्रभाव को प्राप्त किया है।

1.7.6 भग्न परिवार(Broken homes):-

पारिवारिक संरचना का एक पक्ष-भग्न-परिवार(broken homes)अनेक अध्ययनों का विषय रहा हैं। भग्न परिवार का तात्पर्य माता/पिता में से किसी एककी मृत्यु, दोनों में से किसी एक का अलग रहना, तलाक, माता-पिता में मध आसक्तता अथवा मादक पदार्थ अक्रूरता दोनों में से किसी एक

द्वारा मारपीट को लिया जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में बच्चा अपने को अस्वीकृत(disowned)तथा असुरक्षित (inseciure) समझने लगता है औरअपनी समस्या का समाधान घरकि चार-दीवारों न तलाश करके चोराहे पर तलाश करने लगता है जहाँ वह असामाजिक व्यवहारों को घटित देखता है, उनका अनुकरण करता है और अपराध की और चल पड़ता है।

1.7.7 माता-पिता एवं बालक संबंध (parent child relationship):-

बालक में विकासात्मक चित्र (developmental picture) में अति महत्वपूर्ण एकल कारक माता-पिता से संबंध(माता-पिता का व्यवहार) है। परिवार से अन्तरव्यक्तिगत व्यवहार का प्रारूप बालक के व्यवहार एवं संज्ञान (cognition)की संरचना (shaping)करता है। जैसे-जैसे बच्चे का विकास होता है, वह अपने सामाजिक संबंधों के भ्रमित वातावरण में कम से कम विश्वास योग्य एवं निर्भर योग्य आधारकी खोज करता है जो माता-पिता के रूप में प्राप्त होते है। परन्तु कुछ परिस्थितियों में उनमें और माता-पिता में कठोर भाव (hard feeling), खुला अन्तर्द्वन्द्व(open coflict) एवं भ्रम (misunderstanding) पायी जाती है।

आक्रात्मक किशोर बालक/किशोरों एवं उनके माता-पिता के मध्य अन्तरव्यक्तिगतसंबंधों का विश्लेषण करते समय माता-पिता पर किशोरकी निर्भरता जैसे- महत्वपूर्ण कारक ध्यान देना आवश्यक हैक्योकि माता-पिता से प्राप्त स्नेह औरवात्सल्य में असंगति किशोर में माता-पिता के प्रति आक्रात्मक एवं विद्रोही व्यवहार को विकसित करती हैऔर जब इन अपेक्षाओंऔर आवश्यकताओंकीउपयुक्त संतुष्टि नही होती है तो उनमें असंतुष्टि (dissatisfaction) एवं शत्रुता (hostility) उत्पन्न होती है जो उनके सामाजिक विचलनकी अविचारित कारण (precipitating cause) बन जाती है|

1.7.8 माता-पिता द्वारा बच्चों का शोषण:-

क्षेत्र विशेष में पड़ोस प्रभाव अपराध प्रकृति को करता है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में यौन समस्या अपराध तथा चोरी, सेंधमारी, अपहरण, धोखाआदि से संबंधित समस्या होते है।

1.7.9 सामाजिक:-

आर्थिक कठिनाई (financial hardship) किशोरोंकीसमस्या का एक प्रमुख कारण है। जब माता-पिता अपने बच्चों के आवश्यकताओंकीपूर्ति आर्थिक कठिनाई के कारण नही कर पाते है, तो बच्चे अपने आवश्यकताओंकीपूर्ति करने के लिये असामाजिक कार्य करने लगते है।

1.8 किशोरावस्था में समस्याओं के प्रकार:-

मानव विकासकीचार अवस्थाएं मानी गयी हैं बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था और प्रौढावस्था। यह विकास शारीरिक, मानसिक औरसामाजिक रूप में होता रहता है। किशोरावस्था सबसे अधिक परिवर्तनशील अवधी है। किशोरावस्था के निम्नलिखित महत्वपूर्ण लक्षण इसकी अन्य अवस्थाओं से भिन्नता को प्रकट करते हैं-

1.8.1 शारीरिकपरिवर्तन-किशोरावस्था में तीव्रता से शारीरिक विकास और मानसिक परिवर्तन होते हैं। विकासकी प्रक्रिया के कारण अंगों में भी परिवर्तन आता है, जो व्यक्तिगत प्रजनन परिपक्वता को प्राप्त करते हैं। इनका सीधा संबंध यौन विकास से है।

1.8.2 मनौवैज्ञानिक परिवर्तन-किशोरावस्था मानसिक, भौतिक औरभावनात्मक परिपक्वता के विकासकीभी अवस्था है। एक किशोर, छोटे बच्चेकी तरह किसी दूसरे पर निर्भर रहनेकी अपेक्षा, प्रौढ़ व्यक्ति की तरह स्वतंत्र रहनेकी इच्छा प्रकट करता है। इस समय किशोर पहली बार तीव्र यौन इच्छा का अनुभव करता है, इसी कारण विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित रहता है। इस अवस्था में किशोर मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता है यह अवस्था अत्यंत संवेदनशील मानी गयी है।

1.8.3 सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन-किशोरों में सामजिक-सांस्कृतिक मेल-जोल के फलस्वरूप कुछ और परिवर्तन भी आते हैं। सामान्यता: समाज किशोरोंकी भूमिका को निश्चित रूप में परिभाषित नहीं करता। फलस्वरूप किशोर बाल्यावस्था और प्रौढावस्था के मध्य अपने को असमंजस्यकि स्थिति में पाते हैं। उनकी मनौवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समाज द्वारा महत्व नहीं दिया जाता, इसी कारण उनमें क्रोध, तनाव एवं व्यग्रताकी प्रवृतिया उत्पन्न होती हैं। किशोरावस्था में अन्य अवस्थाओंकी उपेक्षा उत्तेजना एवं भावनात्मकता अधिक प्रबल होती है।

1.8.4 व्यवहारिक परिवर्तन-उपयुक्त परिवर्तनों के कारण किशोरों के व्यवहार में निम्न लक्षण उजागर होते हैं-

i. **स्वतन्त्रता-** शारीरिक, मानसिक औरसामाजिक परिपक्वताकीप्रक्रिया से गुजरते हुए किशोरों में स्वतंत्र रहने कीप्रवृति जाग्रत होती है। जिससे वे अपने आप को प्रौढ़ समाज से दूर रखना प्रारंभ करते हैं।आधुनिक युग का किशोरे अलग रूप से ही अपनी संस्कृति का निर्माण करना चाहता है जिसे उप संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। यह उप-संस्कृति धीरे-धीरे समाज में विद्यमान मूल संस्कृति को प्रभावित करती है।

ii. **पहचान-**किशोर हर स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाने केलिए संघर्ष करते हैं। वे अपनी पहचान बनाए रखें के लिए लिंग भेद तथा अपने को अन्य से उच्च एवं योग्य दर्शाने के प्रयास में होते हैं।

iii. **धनिष्ठता-**किशोरावस्था के दौरान कुछ आधारभूत परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन अधिकतर यौन संबंधों के क्षेत्र के होते हैं। किशोरों में अचानक विपरीत लिंग के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। वे आकर्षण एवं प्रेम के मध्य अंतर स्पष्ट नहीं कर पाते और मात्र शारीरिक आनंद एवं संतुष्टि के लिए सदैव भटके रहते हैं।

1.8.5 समवय समूहों पर निर्भरता-अपनी पहचान व स्वतन्त्रा को बनाए रखने के लिए, किशोर अपने माता-पिता के भावनात्मक बंधनों को त्याग कर अपने मित्रों के साध ही रहना पसंद करते हैं। परन्तु समाज लड़के/लड़कियों के स्वतंत्र मेल-जोल को स्वीकृत नहीं करता। किशोरों का प्रत्येक वर्ग अपने लिंग से संबंधित एक अलग समूह बनाकर अलग में रहना पसंद करता है। इस तरहकीगतिविधियाँ उन्हें समवाय समूहों पर निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। यहीं से ही वे अपने परिवर्तित व्यवहार के प्रति समर्थन एवं स्वीकृति प्राप्त करते हैं।

1.8.6 बुद्धिमता-बौद्धिक क्षमता का विकास भी किशोरों के व्यवहार से प्रदर्शित होता है। उनमें तथ्यों पर आधारित सोच-समझ व तर्कशील निर्णय लेने कीक्षमता उत्पन्न होती है। ये सभी कारण उनमें आत्मानुभूति को विकास करते हैं।

1.8.7 विकास की अवस्थाएं-किशोरावस्था के तीन चरण हैं-

I. पूर्व किशोरावस्था

II. मूल किशोरावस्था

III.किशोरावस्था का अंतिम चरण-

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है की विकास निर्धारित नियमानुसार ही नहीं होता इसी कारण तीनों चरण एक-दूसरेकी सीमाओं का उल्लंघन करते हैं।

I) पूर्व किशोरावस्था- विकासकीयह अवस्था किशोरावस्था का प्रारंभिक चरण है। पूर्व किशोरावस्था के इस चरण में शारीरिक विकास अचानक एवं झलकता है। यह परिवर्तन भिन्न किशोरों में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। इस समय टांगों और भुजाओंकी लम्बी हड्डियों का विकास तीव्रता से होता है। किशोरकीलम्बाई 8 से 9 इंच तक प्रतिवर्ष बढ़ सकती है। लिंग-भेद के कारण लम्बाई अधिक बढ़ती है। इस समय किशोर तीव्र सामाजिक विकास और अपने में गतिशील यौन

विकास का अनुभव करते हैं। वे अपने समन्वय समूहों में जानेकि चेष्टा करते हैं। इस स्तर पर प्यारे दोस्तों का ही महत्व रह जाता है। किशोर अपने-अपने लिंग से संबंधित समूहों का निर्माण करते हैं। यौन संबंधित सोच एवं यौन प्रदर्शन इस स्तर पर प्रारंभ हो जाता है। कुछ अभिभावक इस सामान्य वयवहार को स्वीकृत नहीं करते और किशोरों को दोषी ठहराते हैं। विकास के इस चरण में शारीरिक परिवर्तन से किशोर प्राय: घबरा जाते हैं। वे सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाओं और यौन इच्छाओं के मध्य संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

II) मूल किशोरावस्था- किशोरावस्था का यह चरण शारीरिक, भावनात्मक औरबौद्धिक क्षमताओं के विकास को दर्शाता है। इस चरण में यौन लक्षणों का विकास जारी रहता है तथा प्रजनन अंग, शुक्राणु उत्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं। इस समय किशोर अपने को अभिभावकों से दूर रखने का प्रयास करते हैं। वह प्राय: आदर्शवादी बनते हैं औरयौन के विषय में जानेकी उनकी रुचि निरंतर बढ़ती रहती है। किशोर के विकास का यह चरण प्रयोग औरसाहस से भरा होता है। प्रत्येक किशोर अपने से विपरीत लिंग और समवाय समूहों से संबंध रखना चाहता है। किशोर इस चरण में समाज में अपने अस्तित्व को जानना चाहता है और समाज को अपना योगदान देना चाहता है। किशोरकीमानसिकता इस स्थिति में औरअधिक जटिल बन जाती है। उसकी भावना गहरी औरघनिष्ठ हो जाती है औरउनमें निर्णय लेनेकीशक्ति उत्पन्न हो जाती है।

III) किशोरावस्था का अंतिम चरण- किशोरावस्था के इस चरण में अप्रधान यौन लक्षण भली प्रकार से विकसित हो जाते हैं और यौन अंग प्रौढ़ कार्यकलाप में भी सक्षम हो जाते हैं। किशोर समाज में अपनी अलग पहचान और स्थान की आकांक्षा रखता है। उनकी यह पहचान बाहरी दुनिया के वास्तविक दृश्य से अलग ही होती है। इस समय उनका समवाय समूह कम महत्व रखता है क्योंकि अब मित्रों के चयनकीप्रवृति अधिक होती है। किशोरइस समय अपने जीवन के लक्ष्य को समक्ष रखता है। हालांकि आर्थिक रूप से वह कई वर्षों तक अभिभावक पर ही निर्भर करता है। इस चरण में किशोर सही व गलत मूल्योंकि पहचान करता है तथा उसके अन्दर नैतिकता इत्यादि भावनाओं का विकास होता है। इस समय किशोर अपना भविष्य बनाने के अभिलाषी होते हैं। उपयुक्त कार्य के लिए वे अभिभावकों एवं समाज का समर्थन चाहते हैं ताकि उनके द्वारा उपेक्षित कार्यों का सम्पादन हो।

1.9 किशोरावस्था में शिक्षाकी आवश्यकता:-

किशोरावस्था शिक्षा विद्यार्थियों के किशोरावस्था के बारे में जानकारी प्रदान करनेकीआवश्यकता के सन्दर्भ में उभरी एक नवीन शिक्षा का नाम है। किशोरावस्था जो की बचपन और युवावस्था के बीच का परिवर्तन काल है, को मानवीय जीवनकीएक पृथक अवस्था के रूप में

मान्यता केवल बीसवीं शताब्ती के अंत में ही मिला पायी। हजारों सालों तक मानव विकासकीकेवल तीन अवस्थाएं – बचपन, युवावस्था और बुढ़ापा ही मानी जाती रही है। कृषि प्रधान व ग्रामीण संस्कृति वाले भारतीय व अन्य समाजों में यह धारणा है की व्यक्ति बचपन से सीधा प्रौढावस्था में प्रवेश करता है। अभी तक बच्चों को छोटी आयु में ही प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्व को समझने और वहाँ करने पर बाध्य किया जाता रहा है। युवक पौढ पुरुषों के कामकाज में हाथ बंटाते रहे हैं औरलडकियाँ घर के। बाल विवाहकी कुप्रथा तो बच्चों को यथाशीघ्र प्रौढ़ भूमिका में धकेल देती रही है। विवाह से पूर्व या विवाह होते ही बच्चों को यह जानने पर बाध्य किया जाता रहा है की वे प्रौढ़ हो गए हैं। लेकिन अब कई नवीन सामाजिक औरआर्थिक धारणाओंकी वजह से स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है। शिक्षा और रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों के कारण विवाह करनेकी आयु भी बढ़ गयी है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे घरों और कस्बों से बाहर निकल कर प्राथमिक स्तर से आगे शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनमें से अधिकतर शिक्षा व रोजगारकीखोज में शहरोंकीऔर पलायन कर जाते हैं। देश के अधिकतर भागों में बालविवाहकीघटनाएं न्यूनतम स्तर पर पहुँच गयी है। लडकियाँ भी बड़ी संख्या में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। जिसके फलस्वरूप वे भी शीघ्र ही वैवाहिक बंधन में बंधना नहीं चाहतीं। इस मानसिक परिवर्तन में संचार माध्यमों कीभी महती भूमिका रही है। एक और विवाह कीआयु में वृद्धि हो गयी है और दूसरी औरबच्चों में बेहतर स्वास्थ औरपोषण सुविधाओं के कारण यौवानारम्भ निर्धारित आयु से पहले ही हो जाता है। इन परिवर्तनों के कारण बचपन और प्रौढावस्था में काफी अंतर हो गया है।

1.10 किशोरावस्था में बालकों का व्यवहार:-

किशोरावस्था में बच्चे बड़ोंकी तरह व्यवहार करना शुरू करने लगते है, उन्हें माता-पिताकीबात,उनकी दखलंदाज़ी अच्छी नहीं लगती।बाहर घूमना, बाहर का खाना,मित्रों के साथ बाहर रहना,स्कूल के बहाने घर से बाहर जाना इत्यादि- बातें आम होती जा रहीं हैं।आज-कल एक नया तरीका नेट का होगया है, जिसमे बच्चे अपना समय गवाते है।इसके पीछे शायद स्वयं माता-पिता ही जिम्मेदार है।सबसे पहले हमें अपने बच्चों को समझना होगा, उनकी आदतें कहाँ से पड़ रही है।साथ ही हमें अपने बच्चोंकीकमियों को नज़रंदाज़ नहीं करनी चाहिए किन्तु साथ ही ये बात अवश्य ध्यान देनी होगीकी हम अपने बच्चोंकी शिकायत दूसरों से न करें, दूसरा आदमी आपका अपना है,वो आपके हटते हीआपका मजाक बनाएगा| आपकीकोई मदद नहीं करेगा और दूसरी तरफ आपका बच्चा आपका विश्वास खोता जायेगा।उन्हें जैसे वो बड़े हों तभी उन्हें अनुशासित जीवन का तरीका बताएं, साथ ही स्वयं भी अनुशासन में रहें।यदि हम स्वयं अपने से बड़ों

को जवाब देगे तो बच्चा वही सीखेगा एवम बाद में पलट कर जवाब देगा जो की हमें अच्छा नहीं लगता औरहम शुरू हो जाते है की बच्चे तो हमारा सुनते ही नहीं।

किशोरावस्था में प्रवेश के पहले ही हमें बच्चों दुनियादारी के बारे में धीरे-धीरे बताना चाहिए की जीवन में क्या गलत होता है।उनका मस्तिष्क विकार होने से पूर्वही हमें उनके मस्तिष्क का विकास करना चाहिए।यदि उनके मस्तिष्क में सकारात्मक सोच शुरू से बैठ गयी तो उनका जीवन दूसरों को भी रौशनी देगा।हमें उनकी भावनाओं को समझना चाहिए।किसी भी चीज़ का निवारण दंड नहीं होता इसे हमेशा ध्यान रखना चहिये।ये किशोरावस्था नदीकीतेज़ वेगकीलहर के समान होती है जिसमें बहुत सयंम के साथ तैरना पड़ता है। अंतमें मैं यही कहूँगाकीबढ़ते बच्चोंकी जिम्मेदारी हम सभीकि है जिसमें परिवार,विद्यालय,समाज,सभी जम्मेदारी ले तो बच्चे कभी भी अनुशासनहीन नहीं बन सकते।

1.11 ग्रामीण एवं नगरीय किशोरोंकीसमस्याओं में अंतर:-

पिछली आधी शताब्दी से हमारे देश में नगरीय विकास के कारण ग्रामीण व्यक्तियों का ऐसे नगरीय क्षेत्रों में अपकेंद्री(centrifugal)पलायन हुआ,जहाँ पर पहुँचने के लिए जनोपयोगी सेवाए सुगमता से उपलब्ध थी। कई व्यक्ति नगरीय केंद्रों से मीलों दूर है। उत्कृष्ट राजमार्ग, बसें व मोटर, रेडिओं, टेलीविजन औरअखबार ग्रामीण औरनगरीय रोजगार, और नगरीय आवास औरग्रामीण सम्पर्क ने न केवल सामाजिक संरूपों कुछ परिवर्तन किए है, परन्तु जीवनकीएक नई शैली से समन्वय भी स्थापित किया है। ग्रामीणों को अब नगरीय जीवन के बारे में अधिक जानकारी है औरउससे वे इस प्रकार प्रभावित हुए हैकि अब वो जाति, धर्म को अधिक महत्व नही देते है। वे अपने दुष्टिकोण में अधिक उदार हो गए है। वे अब अलगाव में नही रहते। केवल किसानो ने खेतीकीनई पद्धतियाँ अपना ली है। न केवल उनके मूल्यों और आकांक्षाओं में परिवर्तन आया है, परन्तु उनके व्यवहार में भी परिवर्तन हुआ है। जजमानी व्यवस्था कम हो रही है और अन्तरजातीय एव अन्तर्वर्गीय संबंधो में परिवर्तन आ रहा है। विवाह, परिवार और जातीकीपंचायतीकीसंस्थाओ में भी परिवर्तन है। बीमारियोंकीउपचार के लिये प्रारंभिक तरीको पर निर्भर रहने बजाय वे आधुनिक अलोपेथिक दवाई का प्रयोग करते है। चुनाओ में भी इस प्रकार वे एक प्रत्यासीकीधार्मिक अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा के स्थान पर उसकी क्षमताओ और राजनितिक पृष्ठभूमि को महत्व देते है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीकी गावो में अब परम्पराओ का कोई महत्व नही है। व्यक्तिवाद परिवादवाद का स्थान नही ले पा रहा है और नही धर्म निरपेक्षता उस बंधन का स्थान ग्रहण कर पा रही है।

I. नगरीकरण कीसमस्याए:-

नगरीय समस्याएँअनंत है। नशीले पदार्थो का व्यसन, भ्रष्टाचार, और बेरोजगारी उनमे से कुछ है। इन उस सात गंभीर समस्याओं के प्रभाव क्षेत्र औरव्यापकता का विश्लेषण करेंगे जिनका इस पुस्तक का दूसरे अध्यायों में उल्लेख नही हाब है। वे है: (1) आवास और गंदी बस्तियां(2) भीड़-भाड और निव्यक्तीकरण(3) पानीकी आपूर्ति एव जल-विकास (4) परिवहन एव यातायात, (5) विद्युतकीकमी (6) सफाई व्यवस्था, और(7) प्रदूषण।

III. आवास एव गंदी बस्तियां:-

नगर में व्यक्तियों का आवास या आवासहीनता को समाप्त करना एक गंभीर समस्या है। सरकार, उद्योगपति, पूंजीपति, साहसी व्यक्ति, विकास ठेकेदार और मकानमालक निर्धन और मध्यम वर्ग के व्यक्तियोंकीआवासीय आवश्यकताकीपूर्ति नही कर पाए है। सन 2001 के 5.2 करोड़ से भी अधिक लोग झुग्गी-झोपडियों में निवास करते है नगरीय जनसंख्या के संदर्भ में, प्रत्येक छह नगरीय निवासियों में से लगभग एक झुग्गी-झोपडी में निवास करती है।

1.12 शैक्षिक उपलब्धि:-

किसी सीखे गये विशिष्ट विषय कीपरीक्षा में किसी विद्यार्थी द्वारा प्राप्तांक ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि होती है। प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 12 वी के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों के 12 वी बोर्ड के परीक्षाफल के विभिन्न विषयों के प्राप्तांक को उनकी शैक्षिक उपलब्धि माना जाता हैं।

1.13 समस्या कथन:-

"किशोरावस्था के विद्यार्थियों कीसमस्याओं का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

1.14 पारिभाषिक शब्दावली:-

किशोरावस्था- किशोरावस्था 13 साल से प्रारंभ होकर 19 साल कीउम्र तक चलती है। मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को 'आँधी और तूफान'की संज्ञा दी है। इस अवस्था में किशोरों द्वारा वे सभी संवेग दिखाऐ जाते है जो,प्रारंभिक बाल्यावस्था में बालकों द्वारा दिखाऐ जाते है।

समस्या –सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक,व्यक्तिगत, शैक्षिककार्य से है।

5.1 उपसंहार एवं निष्कर्ष-

प्रत्येक बच्चे के जीवन में एक अवधि आता है जबउसने पहले सवाल पूछा: "मैं कौन हूँ? मैं जीवन से क्या चाहता हूं? मैं क्या बनना चाहता हूं?" सवाल ज्यामितीय प्रगति में होते हैं, और जीवन में जवाब खोजने के लिए समय आता है। समयकि थोड़ी अवधि के लिए 11 से 16 साल कीउम्र के बच्चे के विकास में एक बड़ा कदम है और एक किशोर बन जाता है इस समय कार्डिनल न केवल किशोरावस्थाकीमानसिकता को बदलता है, बल्कि उसकी हार्मोनल और शारीरिक स्थिति भी बदलती है। एक किशोरी कमजोर हो जाती है और पर्याप्त समर्थन के बिना उसके अपने व्यक्तित्व के गठन से निपटने में सक्षम नहीं है। स्वयं के साथ आंतरिक संघर्षकीअवधि शुरू होती है, जिनमें से उपग्रह मूड में लगातार बदलाव होते हैं, नए दोस्त और शौककी खोज करते हैं, और आक्रमण कीउपस्थिति। इस अवधि के दौरान, माता-पिता के साथ किशोरोंकी समस्याएं शुरू होती हैं। इसका कारण बच्चेकी आंतरिक आंतरिक विरोधाभास है।परिणामस्वरूप, सम्मान और आपसी समझ खो जाती है। माता-पिता का एक औरसिरदर्द किशोरावस्था के व्यवहारकी समस्या है। अक्सर, कल के बच्चों के व्यवहार को चुनते हैं जो जरूरी परिस्थितियों में आवश्यक है।

किशोरावस्था एक ऐसी संवेदनशील अवधि है जब व्यक्तित्व में बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। वे परिवर्तन इतने आकस्मिक और तीव्र होते हैं कि उनसे कई समस्याओं का जन्म होता है। यद्यपि किशोर इन परिवर्तनों को अनुभव तो करते हैं पर वे प्राय: इन्हें समझने में असमर्थ होते हैं। अभी तक उनके पास कोई ऐसा स्रोत उपलब्ध नहीं है जिसके माध्यम से वे इन परिवर्तनों के विषय में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकें। किन्तु उन्हें इन परिवर्तनों और विकास के बारे में जानकारी चाहिए, इसलिये वे इसके लिए या तो सम-आयु समूहकि मदद लेते हैं, या फिर गुमराह करने वाले सस्ते साहित्य पर निर्भर हो जाते हैं। गलत सूचनाएँ मिलने के कारण वे अक्सर कई भ्रांतियों का शिकार हो जाते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व विकास पर कुप्रभाव पड़ता है।

किशोरावस्था में प्रवेश के पहले ही हमें बच्चों दुनियादारी के बारे में धीरे-धीरे बताना चाहिए की जीवन में क्या गलत होता है|उनका मस्तिष्क विकार होने से पूर्व ही हमें उनके मस्तिष्क का विकास करना चाहिए|यदि उनके मस्तिष्क में सकारात्मक सोच शुरू से बैठ गयी तो उनका जीवन दूसरों को भी रोशनी देगा| हमें उनकी भावनाओं को समझना चाहिए|किसी भी चीज़ का निवारण दंड नहीं होता इसे हमेशा ध्यान रखना चहिये|ये किशोरावस्था नदीकी तेज़ वेग की लहर के समान होती है जिसमें बहुत सयंम के साथ तैरना पड़ता है| बच्चोंकी जिम्मेदारी हम सभीकी है जिसमें परिवार,विद्यालय,समाज,सभी जम्मेदारी ले तो बच्चे कभी भी अनुशासनहीन नहीं बन सकते|

इस अनुसंधान में अध्ययन किये गए चरों का आधार से प्राप्त निष्कर्ष के परिणाम एवं विश्लेषित अधोलिखित हैं|

5.1.1पारिवारिक समस्या:-

परिवारगत समस्याओंकी पहचान हेतु परिकल्पित 10 समस्याओं काचयन किया गया है| छात्रोंकीप्रतिक्रिया को विश्लेषितकरने से स्पष्ट होता है कि परिवारगत समस्या की तीव्रता अन्य समस्याओंकी अपेक्षा कम हैक्योंकि केवल 3 समस्याओंकि और 60% से अधिक छात्रों का अंगीकार्य है| शेषसमस्याओंकि और अंगीकार्यता 40% से भी कम रहा है| अत: हम कह सकते हैं की पारिवार में माता-पिता का किशोरों से अधिक आशा रखना, परिवार में सभी सदस्यों द्वारा किशोरों को स्वतंत्रता न देना, किशोरों को प्रोत्साहित न करना किशोरों को प्रभावित करनेवाली जटिल समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहे हैं|

5.1.2सामजिक समस्या:-

सामजिक समस्याओंकी पहचान हेतु परिकल्पित 10 समस्याओं काचयन किया गया है| छात्रोंकि प्रतिक्रिया को विश्लेषितकरने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक समस्याकी तीव्रता अन्य समस्याओंकि अपेक्षा कम हैंक्योंकि केवल 2 समस्याओंकि और 60% से अधिक छात्रों का अंगीकार्य है,5 समस्याओंकि और अंगीकार्यता 50% से 40% मध्य और शेष 3समस्याओंकि और अंगीकार्यता 40% से भी कम रहा है| अत: हम कह सकते हैं कि किशोरों के साथ मजाक या आलोचना एवं पारिवारिकऔर व्यक्तिगत घटनाओं किशोरों को प्रभावित करनेवाली जटिल समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहे हैं|

5.1.3आर्थिक समस्या:-

आर्थिक समस्याओंकी पहचान हेतु परिकल्पित 10 समस्याओं काचयन किया गया है| छात्रोंकि प्रतिक्रिया को विश्लेषितकरने से स्पष्ट होता है कि आर्थिक समस्याकि तीव्रता अन्य समस्याओंकि अपेक्षा कम हैक्योंकि केवल 2 समस्याओंकि और 60% से अधिक छात्रों का अंगीकार्य है,3 समस्याओंकि और अंगीकार्यता 50% से 40% मध्य और शेष 5समस्याओंकि और अंगीकार्यता 40% से भी कम रहा है| अत: हम कह सकते हैं किशोरों का सामाजिक स्तर और मित्रोंकि संख्याकिशोरों को प्रभावित करनेवाली जटिल समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहे हैं|

5.1.4शैक्षिक समस्या:-

शैक्षिकसमस्याओंकी पहचान हेतु परिकल्पित 10 समस्याओं काचयन किया गया है| छात्रोंकि प्रतिक्रिया को विश्लेषितकरने से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक समस्याकि तीव्रता अन्य समस्याओंकि अपेक्षा न के बराबर होती है कम हैक्योंकि इस समस्याकि और 60% से अधिक छात्रों का अंगीकार्य नहीं है,2 समस्याओंकि और अंगीकार्यता 50% से 40% मध्य और शेष 8समस्याओंकि और अंगीकार्यता 40% से भी कम रहा है| अत: हम कह सकते हैं ये समस्याएँकिशोरों के शैक्षिक स्तर कोनगण्य प्रभावित करनेवाली जटिल समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहे हैं|

5.1.5व्यक्तिगत समस्या:-

व्यक्तिगत समस्याओंकि पहचान हेतु परिकल्पित 10 समस्याओं काचयन किया गया है| छात्रोंकि प्रतिक्रिया को विश्लेषितकरने से स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत समस्याकि तीव्रता अन्य समस्याओंकि अपेक्षा कम हैंक्योंकि केवल 2 समस्याओंकि और 60% से अधिक छात्रों का अंगीकार्य है,3 समस्याओंकि और अंगीकार्यता 50% से 40% मध्य और शेष 5समस्याओंकि और अंगीकार्यता 40% से भी कम रहा है| अत: हम कह सकते हैं कि किशोरों का लड़का/लड़की से संबंध एवं सोशल मीडिया में प्राप्त लाइक याकमेंटव्यक्तिगत घटनाओं किशोरों को प्रभावित करनेवाली जटिल समस्या के रूप में परिलक्षित हो रहे हैं|

5.2काई स्क्वायर टेस्ट (X^2):-

उच्च समस्यायुक्त छात्रों का गणितीयकाई स्क्वायर **(X^2)**6.49 है जो आवश्यक काई स्क्वायर **(X^2)** 5.99 मूल्य से अधिक है जिससे स्पष्ट होता है उच्च समस्या वाले छात्रोंकि उपलब्धि के उपर समस्याओं का प्रभाव तीव्र परिलक्षित होता है|

कम समस्यायुक्त छात्रों का गणितीयकाई स्क्वायर **(X^2)** 1.46 है जो आवश्यककाई स्क्वायर **(X^2)** 5.99 मूल्य से कम है इससे भी स्पष्ट होता है किऔसत समस्या वाले छात्रोंकि उपलब्धि के उपर समस्याओं का प्रभावनगन्य परिलक्षित होता है|

औसत समस्यायुक्त छात्रों का गणितीयकाई स्क्वायर **(X^2)** 0.37 है जो आवश्यककाई स्क्वायर **(X^2)** 5.99 मूल्य से कम है जिससे स्पष्ट है किऔसत समस्या वाले छात्रोंकि उपलब्धि के उपर समस्याओं का प्रभाव नगण्य परिलक्षित होता है|

उपरोक्त उच्च, मध्यम एवं कम समस्यायुक्त छात्रों के काई स्क्वायर **(X^2)** का मान निरक्षण करने से ज्ञात है कि उच्च समस्यामुक्त छात्रोंकि उपलब्धि पर किशोरावस्थाकीसमस्याओं का प्रभाव पड़ता है एवं शेष मध्यम और कम समस्या युक्त छात्रोंकि उपलब्धि पर किशोरावस्थाकि समस्याओं का प्रभाव लगभग नगण्य है| यह समूह के काई स्क्वायर **(X^2)** के मान (8.31) से आवश्यक मान काई स्क्वायर **(X^2)** मान 9.40 से सामान्य रूप से कम है अर्थात निष्कर्ष: कह सकते हैं कि सभी किशोरोंकि समस्याओं का प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है परन्तु उच्च समस्यायुक्त किशोरोंकि समस्याओं का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अवश्य रूप से पड़ता है|

काई स्क्वायर **(X^2)**तालिका में 0.05 सार्थकता स्तर df=2 पर आवश्यक काई स्क्वायर **(X^2)** का मान 5.99 है| उपरोक्त तालिका के आधार से काई स्क्वायर **(X^2)**का गणना द्वारा मान 6.49 प्राप्त हुआ है जो गणना के द्वारा प्राप्तकाई स्क्वायर **(X^2)** वे मान से अधिक है| अत: 0.05 सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष स्वरुप कह सकते हैं कि उच्च समस्यायुक्त किशोरों पर उपलब्धि प्रभावित होती है| लेकिन समूह पर काई स्क्वायर **(X^2)**तालिका में 0.05 सार्थकता स्तर पर df 4 मेंकाई स्क्वायर **(X^2)**का आवश्यक मान 9.48 है| काई स्क्वायर **(X^2)**का गणना द्वारा प्राप्त मान है| गणना के द्वारा प्राप्त का काई स्क्वायर **(X^2)** मान से कम है| अत: 0.05 सार्थकता स्तर निष्कर्ष स्वरुप कह सकते है कि किशोरोंकि समस्याओं को सभी स्तरों पर उपलब्धि के सार्थक स्वरुप से प्रभावित नहीं करता है|

शिक्षाकि दृष्टि से किशोरावस्था एक बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या है| यही वह अवस्था होती है जिसमे छात्र-छात्राओं को जिस भी दिशा में मोड़ा जायेगा वे उसी पथ पर आगे बढ़ते जायेंगे| इस अवस्था में भी उनके बिगड़ने के अवसर अधिक रहते है| अत: इस अवस्था में उन्हें शिक्षकों का उचित मार्गदर्शन मिलना चाहिए|

किशोरावस्था में ही छात्र-छात्राएँ गृह स्तर पर, सांवेगिक स्तर, सामाजिक स्तर पर तथा शैक्षिक स्तर पर तेजी से परिपक्व बनते है| अत: शिक्षा में इस शोधकि उपयोगिता यह हैकि किशोरवय छात्र-छात्राओं कि समस्याओं के शैक्षिक उपलब्धि को सुधारा जाय| इस लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने विचार व्यक्त किये है, जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है-

1.शारीरिक एवं स्वास्थ शिक्षा की व्यवस्थाकि जानी चाहिए जिससे किशोर छात्र-छात्राओं अपने स्वास्थ का भी ध्यान रके|

2. छात्रों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर शिक्षाकि व्यवस्था की जाय|

3. पाठ्यसहगामी क्रियाए भी करवानी चाहिए|

4.नयी-नयी शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए|

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर हम यह कह सकते है प्रस्तुत शोध किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं के समायोजन स्तर को बढ़ाने में मददगार सिद्ध होगी|

5.3सुझाव:-

1. परिवार के अन्य सदस्य बालकोंकी बातों को महत्व दे|

2. पारिवारिक स्तर पर छात्र-छात्राओंकी जरूरतों, आवश्यकता पर ध्यान रखना चाहिए, तथा उसका उचित समाधान करना चाहिए जिससे किशोर वय छात्र-छात्राओं का समायोजन और बेहतर हो सकता है|

3.छात्र-छात्राओं के पाठ्यक्रम में सामाजिक मूल्यों से संबंधित पैटनको अधिक से अधिक शामिल करना चाहिए, जिनसे उनका सामाजिक समायोजन और बेहतर बन सके|

4.शिक्षक, अभिभावक, छात्र-छात्राओं में आत्मविश्वास पैदा करे जिनसे उन्हें विभिन्न स्तरों पर समायोजित होने में मदद मिल सके|

5. विद्यालय में पुस्तक उपलब्ध हो जिससे छात्रों को अध्ययन में सुविधा हो|

6. शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाकि व्यवस्था करनी चाहिए| जिससे वे शैक्षिक रूप से समायोजित हो सके|

7.अध्ययन में नवीन तथा वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करना चाहिए, इससे छात्रों में पढ़ने कीरूचि उत्पन्न होती है और पाठ्यवस्तु को समझने में सरलता होती है|

8. यह भी आवश्यक हैकीशारीरिक समस्याओं पर भी ध्यान दिया जाये| उन्हें पौष्टिक भोजन उचित व्यायाम करने एवं खेलकूद में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए|

9. छात्रों पर कड़ा अनुशासन नही रखना चाहिए| उनके विचारों, भावनाओं, तर्कों का स्वागत करना चाहिए|

10. विद्यालय में सभी शिक्षकों का व्यवहार प्रजातांत्रिक होना चाहिए| छात्रों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए|

5.4भावी अनुसंधान हेतु सुझाव:-

1.ग्रामीण किशोर छात्रों एवं शहरी किशोर छात्रों कीसमस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन|

2. सामान्य विद्यालय और आवासीय विद्यालय के किशोरों कीसमस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन|

3. सरकारी विद्यालय औरनिजी विद्यालय के किशोरों कीसमस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन|

4. आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के किशोरों कीसमस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन|

सन्दर्भ-सूची

- Buch,M.B .(1988-92). Fifth Survey of Research in education abstract Volume II, National Council of Educational Research and Training.
- Buch,M.B .(1978-83). Third Survey of Research in education abtract Volume I, national Council of Education Research and Training.
- Buch,M.B. (1983-88). Fourth Survey of Research in education abract Volume I, National Council of Educational Research and Training.
- Mouly, G.(1964). The Science of Educational Research Eurasia, Publishing House Pvt.Ltd.
- Researches andstudies (A Journal of Department of Education vol- 59 & 60 पृष्ठ संख्या-(44, 58, 61, 70) शिक्षामित्र-त्रैमासिक पत्रिकावर्ष 2 अंक 3, (मार्च 2010)(RNI UPBIL/2008/28046)पृष्ठ संख्या- (6, 19, 21)
- Whitney, F.L. (1914).The Elements of Research Prentice Hall Inc.
- करंदीकर, सुरेश (2006). अध्ययन पुणे फडके प्रकाशन अध्यापनो के मानसशास्त्र|
- कार्डिले, वी. एवं महाले, एस. (2006). नाशिक: संशोधन में सांखिकी तंत्रों के उपयोजन, यशवंतराव चव्हान महा. मुक्त विद्यापीठ|
- कुंडले, एम.बी.(1996). 'शैक्षणिक तत्वज्ञान एव शैक्षणिक समाजशास्त्र 'श्री विद्या प्रकाशन',शनिवार पेठ, पुणे| .
- कुण्डले, एम.बी.(1998). शैक्षणिक तत्वज्ञान और शैक्षिक समाजशास्त्र (9वीं आवृति) पुणे: श्रीविद्या प्रकाशन|
- कुलकर्णी, आर. डी.(2009). प्रगत शैक्षणिक मानसशास्त्र 'विद्या प्रकाशन, नागपुर|

❖ गायकवाड, पी.(1993).'विचारधन,' औरंगाबाद|

❖ गुप्ता,एस.पी .(2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद|

❖ जगताप, एच.एन.(1991). शैक्षिक तंत्रविज्ञान (सुधार द्वितीय वृति) पुणे: नूतन प्रकाशन|

❖ जरारे, वी. एल.(2004). संशोधन प्रणाली, (प्रथम संस्करण) अकोला: अद्वेत प्रकाशन|

❖ तागडे, पी.डी.(2006). शिक्षा संस्करण, पुणे:महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ|

❖ दांडेकर, वा. ना.(1992). शैक्षणिक मुल्यमापन और संख्याशास्त्र (चौथी आवृत्ति) पुणे:विद्या प्रकाशन|

❖ देशपांडे, पी. एवं पाटोले, एन. के.(2006). संशोधन पद्धती, नाशिक:यशवंतराव चव्हाण महा. मुक्त विद्यापीठ|

❖ नागपुरे, आर.(1988).प्राथमिक शिक्षण अभ्यासक्रम, पुणे: महाराष्ट्र राज्य|

❖ पाठक,पी. जी.(2010-11). शिक्षा मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेशन,आगरा|

❖ मंगल, एस.के.(2011). पी. एच. आय. लर्निंग प्रा. लि,नई दिल्ली|

❖ माथूर,एस.एस. (2010 -11). शिक्षा मनिविज्ञान, विनोद पुस्तक भवन,आगरा

❖ शर्मा, एन.के एवं हुड्डा, रामविलास.(2007). शिक्षा कोश,के.एस.के.पब्लिशर्स एव डिस्ट्रिब्यूटर्स, खण्ड-2

❖ सिंह,अरुण.कुमार.(2013). शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पुन: मुद्रण